थांगका कला की समकालीन महिला चित्रकार डॉ सारिका सिंह

डॉ० ओम प्रकाश मिश्रा
प्राचार्य
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी
देहरादून (उत्तराखंड)
ईमेल: *mishraop200@gmail.com*

शिवानी पंवार
शोधार्थी
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी
देहरादून (उत्तराखंड)

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० ओम प्रकाश मिश्रा, शिवानी पंवार

थांगका कला की समकालीन महिला चित्रकार डॉ सारिका सिंह

Artistic Narration 2024, Vol. XV, No. 1, Article No. 20 pp. 114-117

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-2024-vol-xv-no1-233

सारांश

यह थांगका कलाकार के रूप में डॉ सारिका सिंह की यात्रा जटिल कला के प्रति गहन जुनून और उत्कृष्टता की निरंतर खोज की विशेषता है। जो पारंपरिक तिब्बती बौद्ध कला के प्रति अपने अभिनव दृष्टिकोण के लिए जानी जाती है। सांस्कृतिक विरासत के प्रति गहरा सम्मान और थांगका प्रतीकवाद की गहरी समझ के साथ सारिका का काम परंपरा और समकालीन अभिव्यक्ति के बीच एक सेतु का काम करता है। और प्राचीन तकनीकों को संरक्षित करने की प्रतिबद्धता के माध्यम से, वह थांगका बनाती है जो न केवल आँखों को लुभाती है बल्कि गहरे आध्यात्मिक चिंतन को भी जगाती है। अपनी कलात्मक प्रयासो से परे, सारिका सांस्कृतिक संरक्षण प्रयासो और शिक्षा में सक्रिय रूप से शामिल हैं, और दुनिया भर के दर्शकों के साथ थांगका के लिए अपने ज्ञान और जुनून को साझा करती है।

मुख्य बिन्दु

समकालीन, महिला कलाकार, थांगका आर्ट, बौद्ध कला।

डॉ सारिका सिंह एक अत्यधिक कुशल थांगका कलाकार हैं जो पारंपरिक तिब्बती बौद्ध कला रूप से अपने जटिल और उत्कृष्ट काम के लिए जानी जाती है। उन्होंने संभवतः अपने शिल्प को बेहतर बनाने और आश्चर्यजनक थांगका पेंटिंग बनाने के लिए कई वर्ष समर्पित किए हैं जो अक्सर विभिन्न बौद्ध देवताओं, मंडलों और अत्यधिक विशयों को चित्रित करते है। उनकी कलात्मकता संभवतः बौद्ध प्रतिमा विज्ञान और प्रतीकवाद की गहरी समझ को दर्शाती है जो थांगका पेंटिंग की समृद्धि परंपरा में योगदान करती है।

डॉ सारिका सिंह, जो 13 अगस्त 1976 को नई दिल्ली के जन्मे, का सफर उच्च स्तरीय ज्ञान और सांस्कृतिक की दिशा में किया। भारत के धर्मशालाओं में प्रतिष्ठित नोर्बुलिंग्का संस्थान में अपने गुरु टेम्पा चाफेल के संरक्षण में थांगका पेंटिंग की कला में अपनी अध्ययन की शुरुआत की। शुरुआत से लेकर उनकी विशेषज्ञ के रूप में प्रतिष्ठित होने तक का सफर प्रेरणा का प्रतीक है।

थांगका पेंटिंग प्रमुख तिब्बती कला शैली है जो धार्मिक और आध्यात्मिक मुद्दों को उजागर करने के लिए उपयोग की जाती है इसमें विभिन्न धार्मिक प्रतीक और संकेतों इसका उपयोग किया जाता है जो बौद्ध धर्म की सिद्धांतों और मूल्यों को प्रकट करते हैं, प्रतीकों और संकेतों का उपयोग डॉ सारिका सिंह ने अपनी पेंटिंग में बहुत गहराई से दर्शाया है जो थांगका पेंटिंग में संदेशों को साझा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सारिका सिंह ने थांगका पेंटिंग में अनेक प्रमुख प्रतीकों का उपयोग किया है, जैसे की कमल के फूल, विजय बैनर, छतरी, गांठ, मछली, शंख और धर्मचक्र। इन प्रतीकों का उपयोग भावात्मक और सांस्कृतिक संदेशों को साझा करने में मदद करती है ओर धार्मिक अर्थ को समझाने मैं मदद करती है। इन प्रतीकों के साथ– साथ, पेंटिंग में धार्मिक चक्र का उपयोग भी किया है, जो आध्यात्मिक सफलता और अखंडता को प्रतिनिधित्व करती हैं।

डॉ सारिका और मास्टर लोचो एक उत्कृष्ट कलाकार जोड़े है। जिन्होंने अपनी कला के माध्यम से विभिन्न संगठनों और हस्तियों के साथ सहयोग और संवाद किया। 2000 में ऑस्ट्रेलिया में एक कार्यशाला में भाग लेकर उन्हें अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त हुई। 2002 में उन्होंने ग्राज में विश्व शांति के लिए कालचक्र दीक्षा समारोह में चार पेंटिग्स बनाई उन्होंने अपनी पेंटिग्स को लंदन आर्ट गैलरी में प्रदर्शित किया, 2004 में उन्होंने देनवर में धर्मगुरु दलाई लामा के लिए तीन पेंटिग्स बनाई। उन्हें अन्य संगठनों द्वारा भी सम्मानित किया गया। इस रूप में, उन्होंने कला के माध्यम से सामाजिक संदेश को प्रसारित किया ओर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त की।

वर्ष 2015 में, डॉ सारिका सिंह ने पंजाब विश्वविद्यालय से "बौद्ध और तिब्बत अध्ययन" में मास्टर डिग्री प्राप्त की। इस समय, उनका ज्ञान और समाज बौद्ध धर्म और तिब्बत की संस्कृति और इतिहास महत्त्व को समझने में महत्वपूर्ण था।

"सेंटर फॉर लिविंग बौद्ध आर्ट", **"थांगडे गत्सल थांगका स्टूडियो"** और बाद में "हिमालय कला संग्रहालय" की स्थापना सारिका के प्रयास भारत और तिब्बत के बीच साझा सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान का प्रतिनिधित्व करते है। "सेंटर फॉर लीविंग बुद्धिस्ट आर्ट" और "थांगडे गत्सल थांगका स्टूडियो" का उद्देश्य संभवतः थांगका पेंटिंग की जटिल कला का एक पारंपरिक रूप है जिसमें बौद्ध देवताओं, मंडलों और अन्य आध्यात्मिक रूपांकनों के विस्तृत चित्रण शामिल हैं।

2019 में **"हिमालय कला संग्रहालय"** की स्थापना हिमालय क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और मानने के लिए सारिका की प्रतिबद्धता को और अधिक रेखांकित करती है। यह संग्रहालय पारंपरिक से लेकर समकालीन तक, भारत और तिब्बत दोनों की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक ठीक परम्पराओं में निहित विधि कलात्मक अभिव्यक्तियों के भंडार के रूप में कार्य करता है। डॉ सारिका ने अपने 25 वर्षों में 300 से अधिक मास्टरपीस पेंटिंग बनाई हैं। हिमालय कला संग्रहालय जुनून से प्रेरित जोड़ें के दिमाग की उपज है जिसमे कुछ पेंटिंग प्रदर्शित की गई है, जिन्हें पूरा करने में 5 साल से 7 साल लगे हैं और लगभग 12 फिट ऊंचे हैं। संग्रहालय में इन कलाकारों द्वारा 25 वर्षों की अवधि में बनाई गई 45 बेहतरीन उत्कृष्ट कलाकृतियाँ प्रदर्शित है।

फिर वर्ष 2021 में, उन्होंने हिमाचल प्रदेश के केंद्रीय विद्यालय से पीएचडी पूरी की। उनकी विशेषज्ञ मे, भी थांगका पेंटिंग ओर बौद्ध धर्म की अंतरा विरुद्ध एवं सामंजस्य को समझाने में उनका गृह ज्ञान प्रकट होता है।

भारतीय और तिब्बती गुरुओं द्वारा समर्पित परम्पराओं में निहित होने के साथ–साथ समकालीन उत्कृष्टता को प्रतिबिंबित करने वाले कार्यों के माध्यम से बौद्ध कला के बारे में जागरूकता बढ़ाने का संग्रहालय का मिशन सराहनीय हैं। सदियों से चली आ रही कलाकृतियों और कलाकृतियों को प्रदर्शित करके, संग्रहालय आगंतुकों को बौद्ध कला के विकास, इसके ऐतिहासिक महत्त्व और इसके भौगोलिक प्रयास का व्यापक दृश्य प्रदान करता है।

प्रदर्शनियों, शैक्षिक कार्यक्रमो और आउटरीच गतिविधियों के माध्यम से, हिमालय कला संग्रहालय बौद्ध कला की 2300 साल पुरानी यात्रा युगों और भौगोलिक परिदृश्यों में एक खिड़की के रूप में कार्य करता। बौद्ध कला की विविधता ओर समृद्धि को उजागर करके, सारिका की पहल कला प्रेमियों, विद्वानों और आम जनता के बीच इस प्राचीन विरासत की गहरी समझ ओर सराहना को बढ़ावा देती है।

निष्कर्ष

थांगका कला की दुनिया में सारिका सिंह का योगदान बहुआयामी है, जिसमें कलात्मक नवाचार, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और सांस्कृतिक संरक्षण शामिल हैं। एक कलाकार के रूप में उनकी यात्रा प्रेरणा की किरण के रूप में काम करती है, जो हमें सीमाओं को पार करने ओर मानवीय भावना को रोशन करने के लिए कला की परिवर्तनकारी शक्ति की याद दिलाती है।

डॉ सारिका एक प्रतिष्ठित थांगका कलाकार, बौद्ध कला के क्षेत्र में परंपरा और नवीनता के मिश्रण का प्रतीक है। रंग, रूप और संरचना में अपनी निपुणता के माध्यम से, वह प्राचीन रूपांकनों में नई जान फूंकती है। सारिका की कृतियाँ भौगोलिक सीमाओं से परे है, उनकी कृतियां दुनिया भर की प्रतिष्ठित दीर्घाओं और संग्रहालयों में प्रदर्शित है।

कुल मिलाकर, डॉ सारिका थांगका कला की दुनिया में संपूर्ण, प्रतिभा और नवीनता का एक चमकदार उदाहरण बनकर खड़ी है अपने काम के माध्यम से, वह न केवल इस प्राचीन परंपरा की विरासत का सम्मान करती है बल्कि दूसरों को तिब्बती कला और संस्कृति के दायरे में कलात्मक अभी व्यक्ति की असीमित संभावनाओं का पता लगाने के लिए भी प्रेरित करती है।

संछार्भ

https://www.indianshelf.in/the-secrets-of-thangka-painting-revealed/

https://www.oneindia.com/2011/10/24/sarika-singh-1st-woman-thangka-painter-arvind.html

https://en.m.wikipedia.org/wiki/Sarika_Singh_(Thangka_painter)

https://www.tribuneindia.com/news/himachal/thangka-masters-keep-tibetan-art-alive-600653